8

राष्ट्रवाद की भावना के विकास में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

नरेश कुमार*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक नई शिक्षा प्रणाली का निर्माण करती है, जो 21वीं सदी की जरूरतों को पूरा करती है। यह नीति विद्यार्थियों में देशभक्ति, गौरव और जिम्मेदारी की भावना बढ़ाने पर बल देती है। इसमें भारतीय संस्कृति, परंपराओं और स्थानीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। यह बहुभाषावाद, नैतिक शिक्षा और नागरिक जिम्मेदारियों पर भी बल देती है। नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक विकास, अनुभवात्मक शिक्षा और सामुदायिक जुड़ाव से जोड़ना है। यह उन्हें भारत की ऐतिहासिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों से परिचित कराती है। नीति समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देकर सभी को समान अवसर देने की बात करती है। इन सब पहलुओं से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, संस्कृति के प्रति सम्मान और जिम्मेदार नागरिकता की भावना विकसित होती है। यदि इसे सही तरीके से लागू किया जाए, तो यह नीति भारत के उज्ज्वल और एकजुट भविष्य की ओर एक बड़ा कदम हो सकती है। प्रस्तुत लेख में राष्ट्रवाद की भावना के विकास में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका का उल्लेख है।

भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा-प्रणाली को मजबूत करने के उद्देश्य से एक व्यापक रूपरेखा है। विद्यार्थियों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा देने पर शिक्षा व्यवस्था का ध्यान केंद्रित करना इस नीति के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। इस संदर्भ में राष्ट्रवाद को राष्ट्र, उसकी संस्कृति और उसके मूल्यों के प्रति गर्व, सम्मान और प्रतिबद्धता की भावना के रूप में देखे जाने की बात कही गई है।

ऐतिहासिक संदर्भ और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता

भारत की शिक्षा नीतियों का ऐतिहासिक रूप से पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ संतुलित करने का लक्ष्य रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (1992 में संशोधित) ने व्यापक शिक्षा सुधारों की नींव रखी। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों में तेजी से हुए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ने एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता पैदा कर दी है। इसी संदर्भ को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़

*सहायक आचार्य, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, डिफेंस कॉलोनी, दिल्ली 110 024

करते हुए, समकालीन चुनौतियों का समाधान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में राष्ट्रवाद को समझना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित राष्ट्रवाद न केवल देशभक्ति के उत्साह से परिपूर्ण है, बल्कि इसमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की समझ और प्रशंसा, राष्ट्र निर्माण के प्रति जिम्मेदारी की भावना और एक मजबूत राष्ट्रीय पहचान बनाए रखते हुए वैश्विक दृष्टिकोण का विकास शामिल है। यह नीति समग्र शिक्षा पर बल देती है जिसमें संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक पहलू शामिल हैं जिससे ऐसे सर्वांगीण नागरिक तैयार करने का लक्ष्य है जो समाज और राष्ट्र में सकारात्मक योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने से संबंधित प्रमुख प्रावधान

भारत सरकार द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन लाने के उद्देश्य से एक परिवर्तनकारी दिशा-निर्देश है। इसके विभिन्न उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में राष्ट्रवाद और गर्व की भावना को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने वाले कुछ प्रमुख प्रावधान इस प्रकार हैं—

1. **समग्र और बहु-विषयक शिक्षा**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला, विज्ञान और मानविकी के एकीकरण को प्रोत्साहित करते हुए शिक्षा के लिए एक समग्र और बहु-विषयक दृष्टिकोण की वकालत करती है। यह नीति व्यापक दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा-प्रणाली सुनिश्चित करती है, जिससे कि विद्यार्थी अपने देश की विविध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत की अच्छी समझ विकसित करें। इस नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों से अवगत कराकर भारत के समृद्ध इतिहास और वैश्विक ज्ञान में योगदान के लिए गर्व और सम्मान की भावना पैदा करना है।

> "समग्र और बहु-विषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं—बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक तथा नैतिक को एकीकृत तरीके से विकसित करना होगा। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास—कला, मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और व्यावसायिक, तकनीकी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण हैं। 21वीं सदी की क्षमता, सामाजिक जुड़ाव की नैतिकता; व्यावसायिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स); जैसे—संप्रेषण, चर्चा, वाद-विवाद और एक चुने हुए क्षेत्र अथवा क्षेत्रों में अच्छी विशेषज्ञता में मदद करेगी।" (पृष्ठ 58, अनुच्छेद 11.3, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

2. **स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान का समावेश**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण प्रावधान पाठ्यक्रम में स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को शामिल करना है। इस पहल का उद्देश्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अद्वितीय पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं को संरक्षित और बढ़ावा देना है। अपनी स्थानीय विरासत के बारे में सीखकर, विद्यार्थी अपनी जड़ों से गहरा जुड़ाव विकसित करते हैं, अपनी सांस्कृतिक पहचान

पर गर्व की भावना को बढ़ावा देते हैं और राष्ट्रवाद की समग्र भावना में योगदान देते हैं।

"भारत संस्कृति का समृद्ध भंडार है जो हजारों वर्षों में विकसित हुआ है और यहाँ की कला, साहित्यिक कृतियों, प्रथाओं, परंपराओं, भाषायी अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के स्थलों इत्यादि में परिलक्षित होता हुआ दिखता है... भारत की इस सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार देश की उच्चतर प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि यह देश की पहचान के साथ-साथ इसकी अर्थव्यवस्था के लिए भी बहुत जरूरी है।" (पृष्ठ 86, अनुच्छेद 22.1, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

3. **बहुभाषावाद को बढ़ावा देना** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषावाद को महत्व देती है और प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग की वकालत करती है। इससे विद्यार्थी अपनी संस्कृति और जड़ों से गहराई से जुड़ पाते हैं। मातृभाषा में सीखने से न केवल उनकी सोचने-समझने की क्षमता बढ़ती है, बल्कि वे भारत की भाषायी विविधता का सम्मान करना भी सीखते हैं। यह दृष्टिकोण राष्ट्रवाद की समावेशी भावना को मजबूत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह भी चाहती है कि शिक्षक विविध भाषाओं और संस्कृतियों से आए विद्यार्थियों को सकारात्मक रूप से स्वीकार करें और कक्षा में उनके अनुभवों का उपयोग करें। इससे विद्यार्थियों में परस्पर सम्मान, भाषिक समृद्धि और एकजुटता की भावना विकसित होती है जो एक मजबूत और एकता से भरे राष्ट्र के निर्माण में सहायक है।

"भारत की भाषाएँ दुनिया में सबसे समृद्ध, सबसे वैज्ञानिक, सबसे सुंदर और सबसे अधिक अभिव्यंजक भाषाओं में से हैं जिनमें प्राचीन और आधुनिक साहित्य के विशाल भंडार हैं। इन भाषाओं में लिखी गई फिल्म, संगीत और साहित्य भारत की राष्ट्रीय पहचान और धरोहर है। सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से सभी युवा भारतीयों को अपने देश की भाषाओं के विशाल भंडार और इनके साहित्य के खजाने के बारे में जागरूक होना चाहिए।" (पृष्ठ 21, अनुच्छेद 4.15, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

"भाषा, नि:संदेह कला और संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। ...संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य, नाटक, संगीत, फिल्म आदि के रूप में कला की पूरी सराहना करना बिना भाषा के संभव नहीं है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा।" (पृष्ठ 87, अनुच्छेद 22.4, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

4. **मूल्य आधारित शिक्षा** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है जिसमें नैतिकता, सहानुभूति, दूसरों के प्रति सम्मान और नागरिक जिम्मेदारियाँ सिखाना शामिल है। इन मूल्यों को स्थापित करके नीति का उद्देश्य ऐसे जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है जो अपने राष्ट्र की भलाई के लिए प्रतिबद्ध हों। मूल्यों और नैतिकता की शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी अपने देश और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना के साथ बड़े हों जिससे राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा मिले। भिन्न-भिन्न पाठ्यचर्यक विषयों की विषयवस्तु

को चिह्नित करके विद्यार्थियों को उनके कर्तव्य एवं आधिकारों के प्रति सचेत किया जा सकता है। भिन्न-भिन्न सहगामी गतिविधियों का आयोजन कर सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों के विकास के अवसर दिए जा सकते हैं।

"मूल्य आधारित शिक्षा में निम्न शामिल हैं — मानवीय, नैतिक, संवैधानिक तथा सार्वभौमिक मानवीय मूल्य जैसे — सत्य, नेक आचरण, शांति, प्रेम, अहिंसा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नागरिक मूल्य और जीवन कौशल; सेवा तथा सामुदायिक कार्यकर्मों में सहभागिता समग्र शिक्षा का अभिन्न अंग होगा। जैसे-जैसे — दुनिया तेजी से आपस में जुड़ती जा रही है वैश्विक नागरिक शिक्षा, समकालीन वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया, शिक्षार्थियों को वैश्विक मुद्दों को समझने और अधिक शांतिपूर्ण, सहिष्णु, समावेशी, सुरक्षित और सतत समाज के सक्रिय प्रवर्तक बनने के लिए प्रदान की जाएगी।" (पृष्ठ 59, अनुच्छेद 11.8, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

5. **भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर विशेष ध्यान** — वर्ष 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आइ.के.एस.) को एकीकृत करने के महत्व पर प्रकाश डालती है। इसमें भारत के लिए अद्वितीय पारंपरिक विज्ञान, दर्शन, साहित्य और अन्य बौद्धिक परंपराएँ शामिल हैं। भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आइ.के.एस.) को शामिल करके नीति न केवल इन मूल्यवान संसाधनों को संरक्षित करती है, बल्कि विद्यार्थियों में गर्व और पहचान की भावना भी पैदा करती है। वैश्विक ज्ञान में भारत के योगदान को समझना और उसकी सराहना करना राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ावा देता है और विद्यार्थियों को इस विरासत को आगे बढ़ाने में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे पाठ्यपुस्तकों में उन बिंदुओं को चिह्नित करें जो सापेक्ष रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ते हैं। कक्षा में ऐसी गतिविधियों का आयोजन किया जाए, जो विद्यार्थियों को भारत की ज्ञान परंपरा से परिचित करवा सके, जैसे — आहार, योग, खेलकूद, कला आदि पर चर्चा आदि।

6. **अनुभवात्मक और समुदाय-आधारित शिक्षा** — यह नीति अनुभवात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है जिसमें क्षेत्र-भ्रमण, सामुदायिक सेवा और स्थानीय मुद्दों से संबंधित परियोजनाएँ शामिल हैं। यह व्यावहारिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को उनके सीखने को वास्तविक जीवन के परिदृश्यों से जोड़ने, उनके समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने और सामाजिक विकास में योगदान करने में मदद करता है। स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ना और स्थानीय मुद्दों को संबोधित करना राष्ट्र के प्रति अपनेपन और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देता है। विद्यालय में बहुत से ऐसे कार्य होते हैं जिनमें समुदाय की भागीदारी को आमंत्रित किया जाए, जैसे कि प्रकृति भ्रमण के आयोजन में, विद्यालय में बागवानी, उत्सव आदि के आयोजन में अभिभावकों की सहभागिता आमंत्रित करना।

7. **राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रीय त्योहारों के उत्सव, राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भागीदारी और राष्ट्रीय नायकों के जीवन और योगदान के बारे में जानने को प्रोत्साहित करके राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देती है। ये गतिविधियाँ विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के बीच एकता और साझा पहचान की भावना पैदा करती है। देश की उपलब्धियों का जश्न मनाना और उसके नायकों के प्रयासों को पहचानना सामूहिक राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में मदद करता है। शिक्षक भाषा, इतिहास जैसे पाठ्यचर्यक विषयों के सत्रों में महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन, विचारों और योगदान का परिचय दे सकते हैं। विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में विभिन्न संस्कृतियों के लोकगीत, लोककलाओं की प्रस्तुति दी जा सकती है।

8. **आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान पर जोर** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल के विकास पर बल देती है। विद्यार्थियों को विभिन्न चुनौतियों का विश्लेषण, मूल्यांकन और समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य ऐसे नवोन्मेषी और विचारशील नागरिकों का पोषण करना है, जो राष्ट्रीय विकास में प्रभावी रूप से योगदान दे सकें। आलोचनात्मक सोच पर यह ध्यान विद्यार्थियों को भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य की जटिलताओं की सराहना करने और इसकी बेहतरी की दिशा में काम करने में भी मदद करता है। अध्यापक कक्षा में आलोचनात्मक चिंतन की समझ विकसित करने वाले प्रश्न पूछें, विद्यार्थियों को अनुभान और कल्पना लगाने के भरपूर अवसर दें। समूह कार्यों को प्रोत्साहित करें।

"पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को प्रत्येक विषय में कम करके इसे बुनियादी चीजों पर केंद्रित किया जाएगा, ताकि आलोचनात्मक चिंतन और समग्र, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित और विश्लेषण-आधारित अधिगम पर जरूरी ध्यान दिया जा सके। यह विषयवस्तु अब मुख्य अवधारणाओं, विचारों, अनुप्रयोगों और समस्या पर केंद्रित होगी। शिक्षण और सीखना अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित होगा; सवाल पूछने को प्रोत्साहित किया जाएगा और कक्षाओं में नियमित रूप से अधिक रुचिकर, रचनात्मक, सहयोगात्मक और खोजपूर्ण गतिविधियाँ होंगी, ताकि गहन और प्रायोगिक सीख सुनिश्चित की जा सके।" (पृष्ठ 18, अनुच्छेद 4.5, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

9. **शिक्षा में प्रौद्योगिकी का एकीकरण** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण की वकालत करती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि विद्यार्थी आधुनिक दुनिया में आवश्यक डिजिटल साक्षरता और कौशल से लैस हों। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर विद्यार्थी भारत के इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों के बारे में बहुत सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जिससे उनमें गर्व और राष्ट्रवाद की भावना पैदा होती है। इसके अतिरिक्त प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों को

जोड़ सकती है, जिससे राष्ट्रीय एकता और समझ को बढ़ावा मिलता है।

10. **लचीला पाठ्यक्रम और विकल्प आधारित शिक्षा** — यह शिक्षा नीति कई प्रवेश और विकास बिंदुओं के साथ एक लचीला पाठ्यक्रम पेश करती है जिससे विद्यार्थियों को अपनी रुचियों और प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की अनुमति मिलती है। यह लचीलापन विद्यार्थियों को भारत की संस्कृति और विरासत से संबंधित विषयों सहित अपने चुने हुए क्षेत्रों की गहरी समझ और प्रशंसा विकसित करने में मदद करता है। व्यक्तिगत शिक्षा के अवसर प्रदान करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी संलग्न और प्रेरित हों तथा अपनी राष्ट्रीय पहचान पर गर्व की भावना को बढ़ावा दें।

11. **शोध और नवाचार को प्रोत्साहन** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शोध और नवाचार पर जोर देती है, विद्यार्थियों और शिक्षकों को विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक शोध में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करती है। भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक योगदान से संबंधित शोध को बढ़ावा देकर इस नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति राष्ट्र और पर्यावरण के प्रति गर्व और स्वाभिमान की भावना पैदा करना है। स्थानीय और राष्ट्रीय चुनौतियों के लिए अभिनव समाधान भी राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकते हैं और राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत कर सकते हैं।

12. **शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो नीति में परिकल्पित मूल्यों और ज्ञान को प्रदान कर सकें। शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि वे विद्यार्थियों में राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस हों। शिक्षकों को सशक्त बनाकर नीति का उद्देश्य समग्र और मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण बनाना है।

13. **व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कम उम्र से ही व्यावसायिक शिक्षा एंव कौशल विकास को बढ़ावा देती है और यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी व्यावसायिक जीवन के लिए प्रासंगिक व्यावहारिक कौशल से लैस हों। शिक्षा को स्थानीय और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के साथ जोड़कर, नीति का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास में योगदान देने में सक्षम कार्यबल तैयार करना है। कौशल विकास पर यह ध्यान विद्यार्थियों में अपने देश की आर्थिक प्रगति के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की भावना को भी बढ़ावा देता है।

14. **वैश्विक नागरिकता शिक्षा** — राष्ट्रवाद को बढ़ावा देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने के महत्व पर भी बल देती है। विद्यार्थियों को वैश्विक संस्कृतियों और मूल्यों को समझने और उनका सम्मान करते हुए,

अपनी राष्ट्रीय पहचान की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह संतुलित दृष्टिकोण विद्यार्थियों को राष्ट्रीय गौरव और पहचान की मजबूत भावना को बनाए रखते हुए, एक वैश्वीकृत दुनिया में पनपने के लिए तैयार करता है। वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देकर यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों समुदायों में सकारात्मक योगदान देने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हों।

उपरोक्त वर्णन एवं विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यार्थियों में राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत नींव रखी है। समग्र और बहु-विषयक शिक्षा, स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान को शामिल करने, बहुभाषावाद को बढ़ावा देने, मूल्य-आधारित शिक्षा और अन्य प्रमुख प्रावधानों पर बल देने के माध्यम से नीति का उद्देश्य ऐसे सर्वांगीण व्यक्ति तैयार करना है, जो अपनी विरासत पर गर्व करते हैं और राष्ट्र की प्रगति के लिए प्रतिबद्ध हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभावी कार्यान्वयन युवाओं में राष्ट्रवाद और जिम्मेदार नागरिकता की एक मजबूत भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है जिससे राष्ट्र का समग्र विकास और एकता सुनिश्चित हो सके। इन चुनौतियों का समाधान करके और नीति द्वारा प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाकर भारत एक मजबूत शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है, जो राष्ट्रीय गौरव की गहरी भावना का पोषण करती है और अपने नागरिकों को भविष्य के लिए तैयार करती है।

चुनौतियाँ और सिफारिशें

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत नींव रखी है, लेकिन इसके प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए कई चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है—

1. **शिक्षक प्रशिक्षण** — नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित मूल्यों और ज्ञान को प्रदान कर सकें। शिक्षकों को आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
2. **पाठ्यक्रम विकास** — एक ऐसा पाठ्यक्रम विकसित करना जो अकादमिक कठोरता को बनाए रखते हुए स्थानीय ज्ञान, बहुभाषावाद और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को एकीकृत करता हो, महत्वपूर्ण है। संतुलित और व्यापक पाठ्यक्रम बनाने के लिए स्थानीय समुदायों, इतिहासकारों और शैक्षिक विशेषज्ञों के साथ सहयोग आवश्यक है।
3. **बुनियादी ढाँचा और संसाधन** — अनुभवात्मक और समुदाय-आधारित शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए पर्याप्त बुनियादी ढाँचे और संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसमें अच्छी तरह से सुसज्जित कक्षाएँ, पुस्तकालय और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच शामिल है।

4. **निगरानी और मूल्यांकन** — नीति के कार्यान्वयन की नियमित निगरानी और मूल्यांकन इसके प्रभाव का आकलन करने और आवश्यक समायोजन करने के लिए आवश्यक है। निरंतर सुधार सुनिश्चित करने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों से प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) पर विचार किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यार्थियों में राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समग्र और बहु-विषयक शिक्षा, स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान को शामिल करने, बहुभाषावाद को बढ़ावा देने, मूल्य-आधारित शिक्षा और अन्य प्रमुख प्रावधानों पर बल देने के माध्यम से नीति का उद्देश्य ऐसे सर्वांगीण व्यक्ति तैयार करना है जिन्हें अपनी विरासत पर गर्व हो और जो राष्ट्र की प्रगति के लिए प्रतिबद्ध हों। हालाँकि, इसके मार्ग में बहुत-सी चुनौतियाँ हैं, लेकिन इन चुनौतियाँ को अवसरों में बदलते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभावी कार्यान्वयन युवाओं में राष्ट्रवाद और जिम्मेदार नागरिकता की मजबूत भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है जिससे राष्ट्र का समग्र विकास और एकता सुनिश्चित हो सके।

संदर्भ

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep_update/NEP_final_HI_0.pdf
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf